कुषाण – राजवंश

असि० प्रो० डॉ० संदीप कुमार
इतिहास विभाग
बी०एम०कॉलेज, रहिका, मधुबनी
मो०-8051796740

कुषाण वंश

स्रोत – प्रारम्भिक इतिहास के लिये → चीनी स्रोत
- पान-कु कृत सिएन-हान-शू
- फान-ए कृत हाउ-हान-शू

– कनिष्क एवं उसके उत्तराधिकारी → तिब्बती स्रोत (बौद्ध), फाह्यान तथा ह्वेनसांग के विवरण

लेख — कनिष्क के लेख (कौशाम्बी, सारनाथ, मथुरा, सुई विहार, मनिक्याल) से प्राप्त
हुविष्क के लेख (मथुरा से प्राप्त)
कनिष्क द्वितीय के लेख (आरा (अटक)) से प्राप्त

सिक्के – तक्षशिला तथा बेग्राम से प्राप्त

प्रारम्भिक इतिहास – मूलतः यू-ची जाति की एक शाखा (मध्य एशिया)
- अपने क्षेत्र से हूणों के आक्रमण के कारण विस्थापित, 165 ई०पू० में
- शनैः शनैः पश्चिमोत्तर भारत में आगमन

कुषाण वंश की स्थापना
- कुजुल कडफिसेज (कडफिसेज I) के द्वारा
- अंतिम यवन शासक हर्मियस के अवसान (पराजय एवं मृत्यु) पर

कुजुल कडफिसेज की शासनिक उपलब्धि – पह्लवों को पराजित कर काबुल तथा कन्धार पर अधिकार
- सिक्के, जिसके मुख भाग पर हर्मियस तथा पृष्ठ भाग पर कुजुल कडफिसेज का चित्र है

विम कडफिसेज (कडफिसेज II) – कुजुल कडफिसेज का उत्तराधिकारी

उपलब्धियाँ
- भारत (आज के) में कुषाण सत्ता की स्थापना की।
- सोने तथा तांबे के सिक्के खुदवाये
- शैव मतानुयायी था, सिक्कों पर शिव, नन्दी तथा त्रिशूल की आकृति

कनिष्क – विम कडफिसेज का उत्तराधिकारी

शासनिक उपलब्धि
- 78 ई० में शक संवत् की स्थापना
- बंगाल तथा बिहार की विजय – कनिष्क ने पाटलिपुत्र पर आक्रमण

कर वहाँ के शासक को पराजित किया तथा उससे हर्जाने के रूप में एक बहुत बड़ी रकम की

मांग की। किन्तु इस रकम के बदले में वह अश्वघोष (लेखक), बुद्ध का भिक्षा पात्र तथा एक अनोखा मुर्गा पाकर ही संतुष्ट हो गया।

- कनिष्क ने तुर्किस्तान (मध्य एशिया) पर अधिकार के लिये आक्रमण किया किन्तु असफल रहा। पुनः ह्वेनसांग के विवरण से यह ज्ञात होता है कि कनिष्क ने अपनी गलतियों को सुधारते हुए पुनः चीन पर आक्रमण किया तथा इसबार चीन पर अधिकार कर लिया
- कनिष्क ने बैक्ट्रिया, खवारिज्म, तुखार तथा पार्थिया पर भी अधिकार कर लिया।
- सुई विहार अभिलेख से जानकारी मिलती है कि कनिष्क ने सिन्धु नदीघाटी, कपिशा तथा ~~कनिष्क~~ काश्मीर पर भी अधिकार कर लिया था। काश्मीर में उसने कनिष्कपुर नामक नगर की स्थापना की थी।
- कनिष्क बौद्ध धर्म के महायान शाखा से संबद्ध था। इसके शासनकाल में ही कुण्डलवन काश्मीर में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ था।
- कनिष्क का साम्राज्य उत्तर में काश्मीर से लेकर दक्षिण में विन्ध्य पर्वत तक तथा पूर्व में उत्तर-प्रदेश बिहार से लेकर पश्चिम में उत्तरी अफगानिस्तान तक विस्तृत था।
- कनिष्क की राजधानी - पुरुषपुर (पेशावर) थी। दूसरी राजधानी मथुरा थी।
- कनिष्क की उपाधि - महाराजाधिराजदेवपुत्र, देवपुत्रषाहानुषाहि

साम्राज्य एवं शासन प्रबंध - साम्राज्य - शासक (राजा)
↓
क्षत्रप (बड़ी - महाक्षत्रप, छोटी - क्षत्रप)
↓
विषय - विषयपति
↓
भुक्ति
↓
ग्राम - ग्रामिक

* एक ही क्षत्रप (प्रान्त) में दो शासक नियुक्त करने की विचित्र प्रथा का प्रारम्भ कुषाणकाल में देखने को मिलता है।
* कुषाण लेखों में पहली बार दण्डनायक, महादण्डनायक जैसे पदाधिकारियों का उल्लेख मिलता है।

सामाजिक जीवन :- भारत का आन्तरिक सामाजिक जीवन पूर्ववत् बना रहा किन्तु बाह्य (विदेशियों) के आगमन से वर्ण व्यवस्था पर गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया। फलस्वरूप शक, कुषाण आदि विदेशी जातियों को व्रात्य क्षत्रिय कहकर वर्ण व्यवस्था में स्थान दिया गया।

आर्थिक स्थिति – कुषाण शासकों ने सिल्क मार्ग (चीन से ईरान तथा पश्चिमी स्थिया) पर अधिकार कर बिचौलिये के रूप में काफी धन एकत्र किया।

* भारतीय व्यापारी चीन से रेशम खरीदकर रोम को बेचते थे तथा बदले में सोना प्राप्त करते थे। प्लिनी ने भारत की नदियों को रत्नों को वाहक बतलाते हुए कहा है कि रोम प्रतिवर्ष भारत से विलासिता की सामग्री मँगाने में दस करोड़ सेस्टर्स व्यय करता था।

साहित्यिक प्रगति :– अश्वघोष कनिष्क का राजकवि था। अश्वघोष ने बुद्धचरित, सौन्दरानन्द तथा सारिपुत्रप्रकीर्ण की रचना की।

– कनिष्क ने नागार्जुन, पार्श्व, वसुमित्र, मातृचेट तथा संघरक्ष को राजकीय संरक्षण प्रदान किया।

– चरक, कनिष्क का राजवैद्य था। इसने चरक संहिता की रचना की।

कला तथा स्थापत्य :– कनिष्क ने पुरुषपुर (पेशावर) में 400 फीट ऊँचा 13 मंजीला एक टावर का निर्माण करवाया था जो कनिष्क-चैत्य कहा जाता था।

– कनिष्क के समय में ~~बुद्ध~~ मूर्ति निर्माण की दो स्वतंत्र शैलियों की स्थापना हुई।

① गन्धार कला शैली :– प्रचलन – मुख्यतः पश्चिमोत्तर भारत में
– प्रभाव – यूनानी कला का
– विषयवस्तु – बौद्ध धर्म
– कहा जाता है – यूनानी-बौद्ध / ग्रीको-बौद्धिस्ट / इण्डो-ग्रीक / ग्रीको-रोमन / यूनानी-रोमिश शैली
– बुद्ध की प्रथम मूर्ति गांधार शैली में ही निर्मित हुई। (यूनानी विद्वान)
– पत्थर – काले / स्लेटी पत्थर का इस्तेमाल
– सबसे अधिक मूर्ति बुद्ध, बोधिसत्व की निर्मित
– गांधार कला का सर्वोत्तम उदाहरण – तपस्यारत बुद्ध
– बुद्ध की मूर्ति यूनानी देवता अपोलो के काफी निकट प्रतीत होते हैं

② मथुरा कला शैली :– में ही सर्वप्रथम बुद्ध की मूर्ति निर्मित (B.S. Agrawal)
– विषयवस्तु – बौद्ध, जैन, ब्राह्मण धर्म, लौकिक जीवन से संबंधित
– पत्थर – लाल पत्थर, सफेद-चित्तीदार पत्थर
– मूर्ति का स्वरूप – खड़ी तथा बैठी दोनों मुद्रा में